In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

20

राजा राममोहनराय

१९३२०

समाज एवं

हित्य मण्डल प्रकाशन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला : १५८

राजा राममोहन राय

सेवामय जीवन की शिक्षाप्रद कहानी

लेखक

मनहर चौहान

4320

संपादक

यशपाल जैन

हि 344

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६२

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९६२
मूल्य
४० ~~तीस~~ नये पैसे

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में पाठकों को किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पाठकों से

इस दुनिया में कोई भी आदमी जन्म से बड़ा पैदा नहीं होता। वह अपने कामों से बड़ा बनता है। कहावत है कि 'आदमी का काम प्यारा होता है, चाम नहीं।'

राजा राममोहन राय का नाम हमारे देश में कौन नहीं जानता? उन्होंने समाज के लिए और राष्ट्र के लिए बहुत अच्छे-अच्छे काम किये। वह समाज में बुरी रूढ़ियों को सहन नहीं कर सकते थे। उन्हें दूर करने के लिए उन्होंने सारे जीवन प्रयत्न किया और बहुत-सी कुप्रथाओं का अंत कराया।

ऐसे लोगों का शरीर भले ही चला जाय, उनका काम हमेशा जीवित रहता है, साथ ही उनका नाम भी।

आप इस पुस्तक को पढ़ें और ऐसे काम करें, जिन्होंने राममोहन राय को इतना बड़ा बनाया। ऐसे काम करके आपको संतोष मिलेगा, समाज का भला होगा।

—सम्पादक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राजा राममोहन राय

: १ :

तारिणीदेवी को पता चल गया था कि उनका बेटा राममोहन, चोरी-चोरी, कुछ लिखता है। लिखता है और बाहर जाने से पहले कहीं छुपा देता है। एक दिन जब राममोहन घर में नहीं था तो तारिणीदेवी ने उसके कागज खोज निकाले और पढ़ना शुरू किया। उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। गुस्से से उनके हाथ कांपने लगे।

"अजी, सुना ?" उन्होंने राममोहन के पिता रामकान्त राय को पुकारा।

रामकान्त राय आये और बोले, "क्या है ?"

"लीजिये, पढ़िये अपने सुपुत्र के विचार !" तारिणीदेवी ने कागज उनकी ओर बढ़ा दिये। पढ़कर उन्हें भी गुस्सा आया। कहा, "आने दो राममोहन को ! ऐसा डांटूंगा कि वह सब लिखना-पढ़ना भूल जायगा !"

राममोहन घर आया। तुरन्त रामकान्त राय ने उसे बुलवाया। कागजों को मेज पर पटकते हुए बोले, "यह सब क्या लिखा है तुमने ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राममोहन ने आदर तथा विश्वास से कहा, "पिताजी, मैंने कोई बात गलत नहीं लिखी है।"

"गलत ! इसकी एक-एक बात गलत है।"

बहुत देर तक पिता-पुत्र में बहस होती रही। वे कागज राममोहन द्वारा लिखी जा रही एक किताब के कुछ पन्ने थे। उनमें बताया गया था कि ईश्वर दो या अधिक नहीं, एक है और उसकी भक्ति के लिए किसी मूर्ति की पूजा करना जरूरी नहीं है।

रामकान्त राय और तारिणीदेवी का मूर्ति-पूजा में अटल विश्वास था। उन्होंने बचपन से राममोहन और उसके बड़े भाई जगमोहन में यही विश्वास कूट-कूटकर भरा था। एक समय था, जब राममोहन भागवत पढ़े बिना न कुछ खाता था, न कुछ पीता था। वही लड़का बड़ा होकर ऐसी बातें करे।

बहस में राममोहन ने पिता की एक भी बात न मानी। पिता जितने नाराज हुए, उतने ही दुःखी भी हुए। राममोहन चुपचाप उठा और कमरे से बाहर चला गया।

तारिणीदेवी बोलीं, "मैंने आपसे पहले ही कहा था कि बेटे को पढ़ाई के लिए पटना मत भेजिये, पर आप क्यों मानने चले ! वहां के मौलवियों ने राममोहन को भरमा लिया है।"

"पटना न भेजता तो कहां भेजता ? वहां फारसी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जितनी अच्छी पढ़ाई जाती है, किसी और शहर में नहीं। अरबी की पढ़ाई वहां सबसे अच्छी होती है।"

रामकान्त राय की बात सच थी। तारिणीदेवी कुछ देर तक चुप रहीं, फिर बोलीं, "कुछ भी हो, मैं राममोहन को अब पटना न भेजूंगी।"

"कहो तो बनारस भेज दें?"

"ठीक है।" तारिणीदेवी ने मान लिया, "मौलवियों ने उसे अपवित्र कर दिया है। बनारस में उसके पाप दूर हो जायंगे। शिक्षा भी अच्छी ही मिलेगी।"

लेकिन बनारस जाने से पहले ही उसी मूर्ति-पूजा-वाली बात को लेकर पिता-पुत्र में झड़प हो गई। पिता तमतमा उठे और बोले, "राममोहन, या तो हमारा कहा मानो या इस घर से निकल जाओ।"

"पिताजी, मैं आपका कहना जरूर मानूंगा, यदि आप सच्ची बात मानने को कहें। मूर्ति-पूजा से भगवान खुश होते हैं, इसमें मेरा विश्वास नहीं जमता।"

रामकान्त राय आगबबूला हो गये। तारिणीदेवी भी कम गुस्से में नहीं थीं।

"इस घर से निकल जाओ"—ऐसी आज्ञा देकर पिता ने सोचा था कि पुत्र डर जायगा और उनकी बातें मान लेगा, लेकिन हुआ ठीक उल्टा। दो-चार दिनों बाद ही तारिणीदेवी घबराई हुई रामकान्त राय के पास आईं और बोलीं, "राममोहन अपने कमरे में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नहीं है।"

"घबराती क्यों हो ? यहीं कहीं गया होगा।"

"वह घर से भाग गया है।"

"क्या कहती हो ?" पिता चौंके।

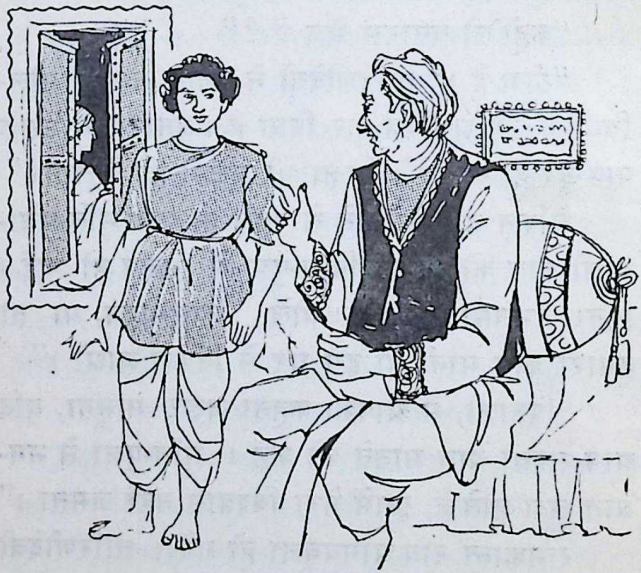

"हमारा कहा मानो या घर से निकल जाओ।"

तारिणीदेवी की आंखें छलक आईं। उन्होंने एक पत्र रामकान्त राय की ओर बढ़ा दिया, जो राममोहन पीछे छोड़ गया था। उसमें लिखा था, "पिताजी, आपकी आज्ञा के अनुसार मैं घर से जा रहा हूं। मेरी खोज करना बेकार है।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पिता की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। कहां चला गया राममोहन ? पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई गई, लेकिन कुछ भी पता न चला। माता-पिता के दुःख का ठिकाना न रहा। राजकुमारों जैसे लाड़ से पाला गया बेटा दर-दर की ठोकरें खा रहा हो, तो माता-पिता को नींद कैसे आ सकती है।

जब कई दिन बीत गये और लड़के का कोई अता-पता न चला तो एक नई बात मन में उठी। माता-पिता आशंका से सिहर उठे। राममोहन जीवित तो है ?

: २ :

राजा राममोहन राय का जन्म २२ मई, १७७२ के दिन राधानगर नामक एक कस्बे में हुआ था, जो उन दिनों बंगाल के बर्दवान जिले में था। उस समय धनवान घराने के लोग एक से अधिक विवाह करना अपना गौरव समझते थे। राममोहन के पिता ने तीन विवाह किये थे। तारिणीदेवी उनकी दूसरी पत्नी थीं। बड़े भाई जगमोहन के अलावा राममोहन की एक सगी छोटी बहन तथा एक सौतेला भाई था।

बाल-विवाह भी तब बहुत होते थे। बचपन में राममोहन का भी विवाह करा दिया गया। कुछ समय बाद उनकी पत्नी स्वर्ग सिधार गईं। माता-पिता ने उनका दूसरा विवाह कर दिया। कौन जानता था कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यही बालक बड़ा होकर बाल-विवाह तथा बहु-विवाह के रिवाजों का घोर विरोध करेगा और पूरे भारत में क्रान्ति की लहर फैला देगा !

घर छोड़कर राममोहन पैदल ही तिब्बत की ओर चल पड़े। रास्ते में जो भी तीर्थस्थान आता, वह रुकते और पण्डितों से धर्म पर बहस करते। तेरह-चौदह वर्ष के बालक का ज्ञान देखकर पण्डितों को दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती, लेकिन उन्हें बुरा भी लगता, क्योंकि यह बालक उनके विचारों को आंख मूंदकर मानने के लिए तैयार नहीं था।

तिब्बत आ गया। रास्ते में राममोहन को अनगिनत कष्ट उठाने पड़े थे, लेकिन वह जरा भी घबराये नहीं। वह ल्हासा पहुंचे, जहां वह बौद्ध धर्म का अध्ययन करना चाहते थे। यहां उन्हें निराशा हाथ लगी। उन्होंने दलाई लामा की पूजा होते देखी। मूर्ति-पूजा के विरोधी राममोहन इसे सहन न कर पाये। उन्होंने निडरता से इसके खिलाफ आवाज उठाई। नन्हा-सा बालक और बड़ी-बड़ी बातें। पहले तो लामाओं ने कोई चिन्ता न की, बाद में उनपर शैतान सवार हुआ। वे बालक राममोहन की हत्या करने पर तुल गये।

कितनी छोटी उम्र और कितना बड़ा संघर्ष ! माता-पिता को अन्तिम नमस्कार किये उन्हें दो साल से अधिक समय बीत चुका था। उनको देखने की हूक मन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

में बार-बार उठती। जब जान का खतरा आ पड़ा तो उन्होंने घर लौट जाना ठीक समझा। एक तिब्बती महिला ने उनकी रक्षा की और उन्हें भारत की सीमा तक पहुंचा दिया।

खट ! खट !

उस दिन तारिणीदेवी ने थाप सुनकर दरवाज़े की ओर कदम बढ़ाये तो उन्होंने सोचा भी नहीं था कि उनका खोया हुआ बेटा वापस आ गया है।

माता-पिता और कुटुम्बी जनों की खुशी की सीमा न रही। यह सन् १७८६ की बात है। जैसा कि पहले से तय किया जा चुका था, राममोहन को आगे की पढ़ाई के लिए बनारस भेज दिया गया, जहां वह चार साल तक रहे। उतनी कम उम्र में ही उन्होंने हिन्दू-धर्म तथा उपनिषदों तक को अच्छी तरह पढ़ और समझ लिया।

वह घर वापस लौटे, लेकिन उनके विचार ज़रा भी नहीं बदले थे। जब पिता ने उनसे पूछा कि मूर्ति की पूजा करनी चाहिए या नहीं, तो उन्होंने पहले की ही तरह 'ना' में सिर हिला दिया। पिता और माता एक तरफ, पुत्र एक तरफ। दिन बीतते गये। और उनके बीच की दूरी भी बढ़ती गई। आगे के जीवन में इसी कारण राममोहन को कई उलझनों का सामना करना पड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

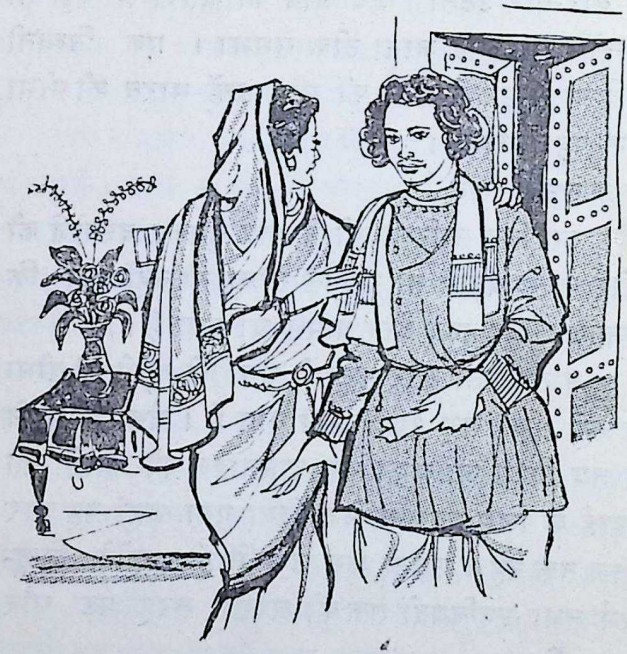

तारिणीदेवी को उनका खोया हुआ बेटा मिल गया।

कुछ साल बाद रामकान्त राय राधानगर छोड़कर लंगरपाड़ा चले गये और नये भवन में रहने लगे। उनकी इच्छा थी कि राममोहन अच्छे व्यापारी निकलें और खूब धन कमायें। जगमोहन व्यापार शुरू कर चुके थे और दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहे थे। राममोहन भी व्यापार में जुट गये। बड़े भाई से उन्होंने किसी तरह कम सफलता न पाई।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सच यह है कि यदि राममोहन ने लगन से धन न कमाया होता तो सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में वह उतना काम शायद न कर पाते, जितना कि वह कर गये। पोंगापंथियों ने उनके कामों में हर तरह से अड़ंगा डालने की कोशिश की थी। धनी होने के कारण राममोहन उन बाधाओं को काफी आसानी से हल कर सके।

इस बीच कुटुम्ब की स्थिति ने जबर्दस्त पलटा खाया। रामकान्त राय को ऐसे दुःख का सामना करना पड़ा कि कुछ ही वर्षों में उन्हें स्वर्ग का बुलावा आ गया।

उन्होंने किसी समय बर्दवान की रानी के यहां काम किया था। रानी की मृत्यु के बाद उसके बेटे ने उनपर तथा जगमोहन पर गबन का मुकदमा चला दिया। अदालत में जीत रानी के बेटे की हुई। रामकान्त और जगमोहन जेल के सींकचों के पीछे कर दिये गए।

यहां राममोहन द्वारा कमाया धन काम आया। पिता और भाई को छुड़ाने के लिए उन्होंने पानी की तरह पैसा बहाया। छुटकारा तो हुआ, लेकिन एक बार जेल जाने के बाद इज्जत हमेशा के लिए खोई जा चुकी थी। रामकान्त अधिक न जी सके। मई १८०३ में उन्होंने सदैव के लिए आंखें मूंद लीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रामकान्त का श्राद्ध दो जगह हुआ। एक कलकत्ता में और दूसरा लंगरपाड़ा में। कलकत्ता का श्राद्ध राममोहन ने किया, जिसमें एक भी सम्बन्धी न आया और लंगरपाड़ा का श्राद्ध किया तारिणीदेवी ने, जिसमें राममोहन को बुलवाया ही न गया। राममोहन के धार्मिक विचारों के कारण तारिणीदेवी उनसे कितनी नाराज़ थीं, यह इस घटना से साफ है।

परन्तु निराश होना राममोहन ने कभी नहीं जाना था। उन्हें केवल अपने कुटुम्ब के विचारों को नहीं, पूरे देश के विचारों को बदलना था। विश्वास और धैर्य के साथ वह अपने काम में जुटे रहे।

जिस वर्ष उनके पिता की मृत्यु हुई, उसी वर्ष उनकी पहली पुस्तक प्रकाशित हुई। उसका शीर्षक था 'तुहफ्त-उल-मुवाहिदीन' अर्थात् 'एक ईश्वर-वादियों को भेंट।' उन्होंने सभी धर्मों का निचोड़ सामने रखते हुए कहा कि ईश्वर एक है। पूरे संसार पर उसीका शासन है। जो एक से अधिक ईश्वरों पर विश्वास रखते हैं और कहते हैं कि तुम्हारा ईश्वर ओछा और हमारा ईश्वर अच्छा है—वे गलती कर रहे हैं।

हम देख चुके हैं कि राममोहन ने बचपन में दूसरा विवाह किया था। अभी तक उनके कोई सन्तान नहीं थी, अतः वह बहुत दुखी थे। हारकर उन्होंने तीसरा विवाह किया। डेढ़ साल बाद उनके यहां बेटा आ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गया। मज़े की बात यह थी कि यह सन्तान तीसरी पत्नी से नहीं, बल्कि दूसरी पत्नी से हुई थी।

: ३ :

अगस्त १८०४।

राममोहन मुर्शिदाबाद से रवाना होकर रामगढ़ पहुंचे तो उनके मन की उदासी दूर नहीं हुई थी। वह ईस्ट इण्डिया कंपनी से इस्तीफा देकर आ रहे थे। यदि उन्होंने इस्तीफा न दिया होता तो कम्पनी में तरक्की करते हुए वह डेढ़ सौ रुपये माहवारी वेतन तक जरूर पहुंच जाते। कम्पनी उनके काम से बहुत खुश थी। उस जमाने में किसी भी भारतवासी को डेढ़ सौ रुपयों से ज्यादा वेतन नहीं मिलता था। वेतन कम होता, तो भी कोई बात नहीं थी, क्योंकि इसीका बेहद रौब था कि फलां आदमी की नौकरी ईस्ट इण्डिया कम्पनी में है।

लेकिन राममोहन ने इस्तीफा दे दिया। क्यों? इसलिए कि कम्पनी का कलक्टर वुडफोर्ड इंगलैंड चला गया था। उसके बाद राममोहन का मन कम्पनी में न लगा था। जाते-जाते वुडफोर्ड ने कहा था, "आप मिस्टर जॉन डिगबी से जरूर मिलियेगा। वह रामगढ़ में न्यायाधीश के रजिस्ट्रार हैं।"

राममोहन डिगबी से मिलने गये। चपरासी ने जॉन डिगबी को सूचना दी, "आपसे राममोहन राय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मिलने आये हैं।" डिगबी सारा काम छोड़ तुरन्त स्वा-

राम मोहनराय और डिगवी

गत करने निकल आया। राममोहन का नाम वह पहले से जानता था। इधर-उधर की बातों के बाद वह बोला, "मैं आपको यहां मुन्शी का पद दिला सकता हूं।"

"लेकिन मेरी एक शर्त है।" राममोहन ने कहा, "भारतीयों को अंग्रेजअधिकारियों के सामने खड़े रहना पड़ता है। मुझसे यह न होगा।"

डिगबी हँस पड़ा, "ऐसा करने के लिए आपसे कहता भी कौन है? हम दो दोस्तों की तरह, एक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दूसरे की मदद करते हुए काम करेंगे। मंजूर है।"

डिगबी और राममोहन कोई दस वर्ष तक साथ रहे। राममोहन के क्रान्तिकारी विचारों को डिगबी बहुत पसंद करते थे। उसके साथ रहकर राममोहन इतनी अच्छी अंग्रेज़ी बोलने लगे कि स्वयं अंग्रेज़ दंग रह जाते।

"मिस्टर राममोहन," एक दिन डिगबी ने कहा, "आप इन धर्म के ठेकेदारों की आंखें खोलिये। वे हैं तो लकीर के फकीर, लेकिन अपने सामने किसीको कुछ नहीं समझते।"

राममोहन जुट गये। कुछ ही दिनों में 'वेदान्त-सार' पुस्तक उनकी लेखनी से जन्म पा चुकी थी। पढ़कर डिगबी बाग़बाग़ हो गया और बोला, "इसे तो मैं इंगलैंड में छपवाऊंगा।"

राममोहन अब रंगपुर में रहने लगे थे। डिगबी ने वहां उन्हें स्वर्गवासी चौधरी राजकिशोर की जायदाद की देखभाल करने के लिए रक्खा था। उनके बच्चे अभी छोटे थे, जो १८१५ में बालिग हुए। तब नौकरी छोड़कर राममोहन कलकत्ता चले आये।

सन् १८१५ में ही जॉन डिगबी ने इस्तीफा दिया और इंगलैंड लौट गया। वहां पहुंचते ही उसने 'वेदान्त-सार' का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करवाया। उसी साल 'वेदान्त सार' बंगला में भी छपा। राम-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मोहन ने अपना धन लगाकर 'केनोपनिषद्' तथा 'ईशोपनिषद्' के अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करवाये और मुफ्त बंटवाये। उनकी अंग्रेजी पुस्तकें इंगलैंड के साथ-साथ अमरीका में भी बिकने लगीं। दरअसल राममोहन का जितना नाम भारत में हुआ था, उससे कई गुना विदेशों में हो चुका था।

ब्राह्मणों में आग धधक उठी। उनके लिए यह बड़े अनर्थ की बात थी कि हिन्दू धर्म के ग्रन्थ अंग्रेजी में छपें और अंग्रेजों द्वारा छुये जायं। मूर्ति-पूजा के विरोधी होने के कारण वे पहले ही राममोहन से खार खाये बैठे थे। वे उनके खिलाफ आंदोलन करने की तैयारियां करने लगे। राममोहन भी असावधान नहीं थे।

ब्राह्मणों ने प्रचार शुरू किया कि राममोहन अंग्रेजों, पादरियों और मौलवियों में उठते-बैठते हैं, उनके साथ खाना-पीना भी रखते हैं, इसलिए वह हिन्दू धर्म के विरोधी हैं। राममोहन ने ललकारकर कहा कि मैं हिन्दू धर्म का विरोधी नहीं, उसके बिगड़े रूप का विरोधी हूं। मैंने केवल यह दिखाना चाहा है कि आज ब्राह्मणों द्वारा जिस रूप में मूर्ति-पूजा की जाती है, वैसा रूप वेदों और शास्त्रों में कहीं नहीं दिया गया है। ईश्वर सब जगह है। कैसे मान लिया जाय कि वह किसी खास मूर्ति में ही रहता है और उसे पूजने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

से प्रसन्न होता है ?

मद्रास के एक पण्डित शंकर शास्त्री ने कड़े शब्दों में राममोहन का विरोध किया, लेकिन उन्होंने 'ए डिफेन्स ऑव हिन्दू थीइज़्म' नामक पुस्तक लिखकर शंकर शास्त्री का मुंह बंद कर दिया। अब कलकत्ता के पण्डित मृत्युञ्जय विद्यालंकार ने उनपर धावा करने के लिए 'वेदान्त-चन्द्रिका' नामक पुस्तक लिखी। राममोहन ने इसका भी जवाब एक पुस्तक लिखकर दिया।

कलकत्ता में राममोहन ने 'आत्मीय सभा' याने 'मित्रों की सभा' की स्थापना की थी। होली के रंगीन त्यौहार के दिन इसका उद्घाटन हुआ था। हर सप्ताह सभा की बैठक होती, जिसमें कोई भी बिना किसी रोक-टोक के आ सकता था और धर्म, समाज आदि विषयों पर बोल सकता था।

कलकत्ता के प्रसिद्ध प्रेसीडेन्सी कालेज का जन्म 'आत्मीय सभा' में हुआ था। सभा में डेविड हेर नामक एक अंग्रेज सज्जन आने-जाने लगे थे। उनकी सहायता से पचास हजार रुपये इकट्ठे किये गए और एक स्कूल खोला गया। धीरे-धीरे वह कालेज बन गया।

: ४ :

आज कई दिनों के बाद राममोहन फिर श्रीरामपुर आनेवाले थे। उन्हें दो प्रसिद्ध पादरियों विलियम केरी और जोशुआ मार्शमेन से मिलना था,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जिनसे उनकी दोस्ती थी। इन दोनों पादरियों ने 'बेप्टिस्ट मिशन' की स्थापना करके ईसाई धर्म के पोंगापंथियों के खिलाफ जिहाद का झण्डा खड़ा किया था।

केरी बोला, "राममोहन राय तो अब 'जबर्दस्त मौलवी' भी कहलाने लगे हैं।"

"उन्होंने मुस्लिम धर्म का अध्ययन कम नहीं किया है।"

मार्शमेन ने कहा, "वह ईसाई धर्म भी अच्छी तरह समझ चुके हैं। उन्होंने इधर तीन नई भाषाएं सीखी हैं—हिब्रू, ग्रीक और लैटिन।"

"पिछली बार जब वह मिले थे तो कह रहे थे कि वह यीशु के आदर्शों पर कोई किताब लिख रहे हैं।"

केरी और मार्शमेन का 'बेप्टिस्ट मिशन' मूर्ति-पूजा का विरोधी था। इधर राममोहन का कहना था कि यीशु देवता नहीं थे, बल्कि एक मानव थे। उनके उपदेशों को माना जा सकता है, पर उन्हें देवता मानना भूल है। इस प्रकार बेप्टिस्ट मिशन और राममोहन राय के उद्देश्य एक-दूसरे से मेल खाते थे।

कुछ देर में राममोहन आ पहुंचे। केरी और मार्शमेन से कई मसलों पर लम्बी-चौड़ी बातें होती रहीं।

"वह किताब पूरी हो गई, जो आप लिख रहे थे?" केरी ने पूछा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"हां।" राममोहन की आंखों में चमक भर गई, "मैंने उसका नाम रखा है—'यीशु का आदर्श : सुख और शान्ति की कुंजी।' कलकत्ता में मिशन के छापेखाने में छप रही।"

एकाएक मार्शमेन ने उनकी आंखों में झांककर कहा, "आप ईसाई बन जाइये न!"

राममोहन चौंके, "क्यों?"

"आपने ईसाई धर्म का कितना गहरा अध्ययन किया है!"

राममोहन हँस पड़े, "गहरा अध्ययन तो मैंने कई धर्मों का किया है। सभी में अच्छाइयां और बुराइयां हैं। बताइये, मैं अपना कमजोर धर्म छोड़कर आपके कमजोर धर्म में क्यों आऊं?"

दोनों पादरी तिलमिला गये, राममोहन भांप चुके थे कि ये दोनों मेरी प्रसिद्धि का दुरुपयोग करके अपने प्रचार को जोर देना चाहते हैं। राममोहन झांसे में न आये। पादरियों से दोस्ती टूट गई।

ज्योंही उनकी पुस्तक 'यीशु का आदर्श : सुख और शान्ति की कुंजी' छपकर बाहर आई, पादरियों ने आलोचनाओं की बौछार कर दी। मार्शमेन एक पत्र 'फ्रेंड ऑव इण्डिया' का प्रकाशन करता था। उसमें राममोहन के लिए उजड्ड, जंगली आदि भद्दे शब्द इस्तेमाल किये गए। राममोहन ने बीस पृष्ठों का एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

निबन्ध लिखकर मार्शमेन को सीख दी कि भद्दे शब्द स्वयं लिखनेवाले की कमजोरी दिखलाते हैं ।

माटमिन, फेरी और राममोहन राय

निबन्ध में उन्होंने सारे आरोपों का खण्डन किया। मार्शमेन ने बत्तीस पृष्ठों का दूसरा निबन्ध लिखकर नये आरोप लगाये । राममोहन ने जवाब में एक मोटी पुस्तक ही लिख डाली । मार्शमेन का जोश ठण्डा पड़ गया । राममोहन ने चार सौ पृष्ठों की एक और पुस्तक छपवाई, जिसका नाम था 'फाइनल अपील टू दि क्रिश्चियन पब्लिक ।'

मार्शमेन एक बंगला पत्र 'समाचार-दर्पण' का भी प्रकाशन करवाता था । उसमें वैदिक धर्म की कटु

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

आलोचना छापी गई और लिखा गया कि किसीमें दम हो तो आलोचना का जवाब दे—उसे 'समाचार दर्पण' में प्रकाशित किया जायगा। राममोहन जानते थे कि अगर वह अपने नाम से जवाब देंगे, तो वह कभी न छपेगा। उन्होंने पण्डित शिवप्रसाद शर्मा के नाम से जवाब भेजा, लेकिन 'समाचार-दर्पण' ने उसे भी लौटा दिया।

राममोहन ने एक नई पत्रिका 'दि ब्राह्मनीकल मैगज़ीन' शुरू कर दी। वह जवाब उसमें प्रकाशित हुआ। इस प्रकार राममोहन ने पत्रकारिता के मैदान में कदम रखा। उन्हें अपना एक छापाखाना भी खोलना पड़ा। जो इने-गिने छापेखाने थे, वे मिशनरियों के थे। मिशनरी उनकी चीजें क्यों छापते ?

ज्यों-ज्यों राममोहन धर्म के ढकोसलों का पर्दा-फाश कर रहे थे, माता तारिणीदेवी का रोष बढ़ता जा रहा था। तारिणीदेवी ने देखा कि अगर किसी तरह राममोहन का धन छीन लिया जाय, तो उनकी शक्ति आधी भी न रह जायगी।

रामकान्त राय ने मरने से पहले दौलत का बंट-वारा कर दिया था, फिर भी तारिणीदेवी ने जग-मोहन के बेटे गोविन्दप्रसाद को अपनी ओर मिलाया और राममोहन पर मुकदमा चला दिया, लेकिन अदालत ने राममोहन के हक में फैसला दिया। कहावत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भी है कि सांच को आंच क्या ! गोविन्दप्रसाद पर डिग्री हुई। उसकी आंखें खुल गईं। उसने माफी मांगी। राममोहन ने माफ कर दिया। यही नहीं, उन्होंने उसे आबकारी विभाग में नौकरी भी दिलवा दी।

लेकिन मुश्किल से एक साल बीता था कि फिर से राममोहन पर मुकदमा चल गया। यह मुकदमा तारिणीदेवी ने स्वयं चलाया था। उसमें गोविन्दप्रसाद ने बाकायदा गवाही दी। जीत इस बार भी राममोहन के साथ रही। दो मुकदमों में गोविन्दप्रसाद और तारिणीदेवी की सारी दौलत स्वाहा हो गई।

इसके बाद तारिणीदेवी का मोह संसार से उठ गया। उन्होंने जगन्नाथपुरी जाना तय कर लिया। पुरी में दो साल रहकर वह स्वर्ग सिधार गईं। ये दो साल उन्होंने मन्दिर का फर्श साफ करते हुए बिताये।

पुरी जाने से पहले बाग़ी बेटे राममोहन से उनकी मुलाकात हुई थी। तब उन्होंने कहा था, "बेटे, मैं बहुत कमजोर स्त्री हूं। मुझे कई बार लगा है, तुम जो कहते हो, ठीक कहते हो, लेकिन जबसे मुझे समझ आई है, मैंने मूर्ति की पूजा की है। एकाएक उसे कैसे छोड़ दूं ?"

: ५ :

भारत में उन दिनों सती-प्रथा का बोलबाला था।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कई बार कोई स्त्री सती नहीं होना चाहती तो भी उसे जबर्दस्ती पति के शव के साथ जीवित जला दिया जाता था। चिता को घेरकर जोर-जोर से ढोल, नगाड़े आदि बजाये जाते, ताकि जलती स्त्री की चीख-पुकार सुनाई न पड़े। स्त्रियों को पैर की जूती के बराबर समझा जाता था। उनमें पढ़ाई का घोर अभाव था, जिससे वे तरह-तरह के अंधविश्वासों तथा सामाजिक बन्धनों से जकड़ी हुई थीं।

राममोहन अच्छी तरह समझते थे कि जबतक स्त्रियों की गुलामी दूर न की जायगी, देश का उद्धार न होगा। अगस्त, १८१८ में उन्होंने सती-प्रथा खत्म करने के लिए पहला कदम उठाया। जहां सती होने की घटनाएं अकसर होती रहती थीं, वहां वह स्वयं जाते और लोगों को समझाकर सही राह पर लाने की कोशिश करते। उन्होंने बंगला में एक पुस्तिका प्रकाशित करवाई, जिसमें सती-प्रथा की बुराइयों पर प्रकाश डाला गया। इसका अंग्रेजी अनुवाद छपवाया गया और बंगला की ही तरह मुफ्त बंटवाया गया।

दिसम्बर १८२९ में लार्ड विलियम बैंटिंक ने राममोहन से प्रभावित होकर सती-प्रथा को गैर-कानूनी कर दिया, लेकिन आंखें होते हुए भी जो लोग अन्धे थे, उन्हें यह कैसे सुहाता? उन्होंने 'धर्म-सभा' नामक एक संस्था बनाई और राममोहन का विरोध करने के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लिए धन-संग्रह किया। 'धर्म-सभा' में लगभग सवा सौ पंडितों का गुट था। उन्होंने राममोहन पर प्रश्न की झड़ी लगा दी।

राममोहन विचलित न हुए। उन्होंने सभी प्रश्नों के उत्तर दिये, जो एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किये गए।

बंगाल में बाल-विधवाओं की कमी नहीं थी। उनका दूसरा विवाह नहीं हो सकता था। जायदाद में भी स्त्रियों को हिस्सा नहीं मिलता था। इन अन्यायों का विरोध करते हुए राममोहन ने एक पुस्तक लिखी। समाज में तहलका मच गया। राममोहन के ही कारण 'ब्राह्म-समाज' नामक संस्था बनी थी, जो 'धर्म-सभा' की थोथी दलीलों का डटकर उत्तर देती थी।

राममोहन ने ईसाई धर्म की कमजोरियों पर जो प्रकाश डाला था, उससे विलियम एडम नामक पादरी बहुत प्रभावित हुए। वह राममोहन से मिले और 'एक-ईश्वर-वाद मिशन' की स्थापना की। राममोहन ने एडम के खर्च का पूरा भार अपने पर ले लिया। एडम हमेशा दौरे पर रहते और भाषण देकर जनता में क्रांति की भावना पैदा करते। धीरे-धीरे उनके मिशन ने काफी बड़ी संस्था का रूप धारण किया, जो 'ब्राह्म-समाज' कहलाई। २३ जनवरी १८३० को उसका उद्घाटन-समारोह किया गया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

: ६ :

राममोहन को 'भारत में देशी पत्रकारिता का जन्मदाता' कहा जाता है। उन्होंने समाज-सुधार के लिए इतने ग्रन्थ लिखे, इतनी पत्रिकाओं का सम्पादन किया कि किसी दूसरे के लिए यह असंभव था। उन्होंने बंगला में सबसे पहले 'एक-ईश्वर-वाद' की प्रार्थनाएं लिखीं। गद्य पर उनका इतना अधिकार था कि उन्हें आधुनिक बंगला-गद्य का निर्माता कहा जाता है। पूरे बीस साल तक वह लगातार लिखते रहे।

फारसी भाषा का पहला साप्ताहिक 'मिरात-उल-अखबार' यानी 'बुद्धि का दर्पण' राममोहन ने ही निकाला था। उसमें राजनीति के अलावा विज्ञान, साहित्य तथा इतिहास के लेख होते थे। शिक्षा के क्षेत्र में जल्दी ही उसने अपनी जगह बना ली।

'मिरात-उल-अखबार' पहले उन्होंने बंगला साप्ताहिक 'संवाद कौमुदी' शुरू कर दिया था। 'मिरात-उल अखबार' उन्हें कुछ समय बाद बन्द कर देना पड़ा। उसमें ऐसे लेख प्रकाशित हुए थे, जो सरकार को हैरानी में डालने के लिए काफी थे। अखबारों को किसी भी प्रकार की आजादी सरकार नहीं देना चाहती थी। १४ मार्च, १८२३ के दिन 'प्रेस निरोधक कानून' पास कर दिया गया। राममोहन ने इसका विरोध किया, लेकिन नक्कारखाने में तूती की कौन सुनता! १८३५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

में जाकर कहीं प्रेस पर लगी बन्दिशें कम हो पाईं।

राममोहन ने ऐसा कोई क्षेत्र नहीं छोड़ा, जिसमें सुधार या क्रान्ति की जरूरत रही हो। उन्होंने नागरिक स्वतन्त्रता का मूल्य खूब पहचाना था। दुनिया के किसी भी कोने में आजादी की लड़ाई लड़ी जाती, राममोहन अपनी पत्रिकाओं तथा लेखों में उसकी तरफ-दारी किये बिना न रहते थे। जब वह इंगलैंड जा रहे थे तो रास्ते में एक फ्रांसीसी जहाज पर उन्होंने तिरंगा झण्डा लहराते देखा। बड़े उत्साह से वह उस जहाज तक गये और तिरंगे का अभिवादन किया।

१८१९ में 'ज्यूरी एक्ट' जारी किया गया था। इस एक्ट के अनुसार हिन्दुओं और मुसलमानों के न्याय-धीश ईसाई बन सकते थे, लेकिन ईसाइयों के न्याया-धीश बनने का अधिकार हिन्दुओं या मुसलमानों को नहीं था। वे 'ज्यूरी' के सदस्य भी नहीं बन सकते थे। राममोहन ने इसका विरोध किया और कहा कि इससे भारतवासियों की हानि तो है ही, स्वयं अंग्रेज सरकार का भी नुकसान है। ऐसी तरफदारी से जनता का विश्वास सरकार पर से उठ जायगा और देश में बलवे का खतरा पैदा हो जायगा।

: ७ :

अब राममोहन राय केवल राममोहन राय नहीं नहीं थे, उनके नाम के आगे 'राजा' शब्द भी जुड़ गया

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

था। दिल्ली में उन दिनों अबुनसर मुइनुद्दीन अकबर का शासन था। राममोहन को 'राजा' की पदवी उसीने दी थी।

बहुत दिनों से राममोहन राय की इच्छा थी कि यूरोप जायं, लेकिन कुटुम्ब की तथा समाज की परिस्थितियां ऐसी उलझी हुई थीं कि उनकी हौंस अबतक पूरी न हो पाई थी। 'राजा' की उपधि देने के बाद दिल्ली-सम्राट् ने उन्हें अपना एलची बना दिया और खास मुहर के साथ लन्दन रवाना किया।

राममोहन के जहाज ने १५ नवम्बर १८३० को भारत का समुद्री किनारा छोड़ा और ८ अप्रैल १८३१ के दिन लीवरपुल पहुंच गया। वहां से वह लन्दन गये, जहां ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ओर से उनका भव्य स्वागत किया गया। ईसाइयों के 'एक-ईश्वरवाद संघ' ने तो उनकी राह पर पलकें ही बिछा दीं।

राममोहन सन १८३२ के अन्तिम मास तक इंगलैंड में रहे! कामन्स-सभा में वह गवाहियां पेश करते, भारत का शासन कैसे किया जाता है, इसपर लेख छपवाते तथा सती-प्रथा को जड़-मूल से नष्ट करने के के लिए अपीलें करते। इंगलैण्ड में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का चार्टर पास होने की तैयारियां थीं। सती-प्रथा गैर-कानूनी तो हो गई थी, लेकिन अभी पूरी तरह नष्ट नहीं हुई थी। इसके लिए चार्टर पास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

होने के समय कानूनी कार्रवाइयां करवाना जरूरी था। दिल्ली के सम्राट् का काम भी राममोहन ने कर

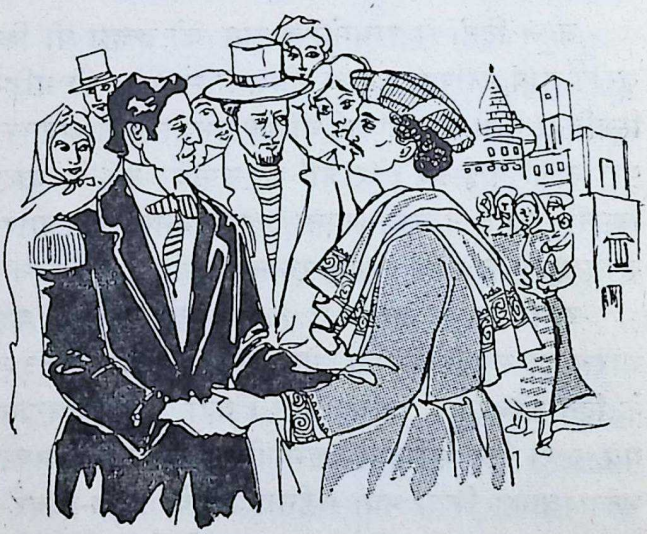

ईस्ट इंडिया कम्पनी की ओर से उनका स्वागत किया गया।

दिया। वह अधिकारियों से मिले, बहस की और सम्राट् का भत्ता बढ़वाकर ही माने। १८३२ में वह फ्रांस गये। वहां उनका नाम उनसे पहले ही पहुंच चुका था। लुई फिलिप ने, जो फ्रांस का राजा था, उन्हें अपने साथ भोज पर बुलाया।

जनवरी १८३३ में वह लन्दन लौट आये। फरवरी में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का विधान सुधारा जानेवाला

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

था। इसीके इंतजार में वह इंगलैंड में रुके रहे, हालांकि उनकी सेहत दिन-ब-दिन गिरती जा रही थी। उन्हें पैसों की तंगी भी पड़ रही थी। वह भारत लौटना चाहते थे।

दवा करवाने के लिए वह ब्रिस्टल पहुंचे। वहां उनके मित्र डाक्टर लेन्ट कारपेन्टर रहते थे। उन्होंने अच्छे-से-अच्छे डाक्टर बुलवाये, पर सभीने हथियार डाल दिये। २७ सितम्बर १८३३ के दिन जिगर की बीमारी उनके प्राण लेकर ही मानी।

कुमारी कॉसल ने अपने बगीचे का एक कोना उनकी समाधि के लिए दे दिया, लेकिन यह समाधि कॉसल परिवार के निजी बगीचे में थी। जन-साधारण को उसके दर्शन नहीं हो पाते थे। १८४२ में द्वारकानाथ ठाकुर इंगलैंड गये। वह रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पितामह थे। उन्होंने ब्रिस्टल में एक नई समाधि बनवाई, जिसकी शैली हिन्दू-मन्दिरों जैसी थी। राजा राममोहन राय के अवशेष २९ मई, १८४३ के दिन वहां आ गये।

इस महान आत्मा की समाधि के दर्शन करने दूर-दूर से लोग ब्रिस्टल आते हैं और श्रद्धा से सिर झुकाते हैं। जब वे समाधि का शिला-लेख पढ़ते हैं, तो उसका हर शब्द उनके हृदय पर सदा के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अंकित हो जाता है—"एक-ईश्वर-वाद' के हिमायती और धुन के पक्के राजा राममोहन राय बहादुर के के अवशेष इस शिला के नीचे आराम कर रहे हैं।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

समाज-विकास-माला

का

जीवनी और संस्मरण-साहित्य

१. विनोबा और भूदान (मा.सं.५)
२. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन (७)
३. ऐसे थे सरदार (१३)
४. बापू की बातें (१८)
५. बाजीप्रभु देशपांडे (३१)
६. कस्तूरबा गांधी (३३)
७. राजा भोज (४७)
८. गांधीजी का संसार-प्रवेश (४९)
९. ये थे नेताजी (५०)
१०. भगवान के प्यारे (६०)
११. हारूं-अल-रशीद (६१)
१२. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन (६९)
१३. नाना फड़नवीस (७१)
१४. राजेन्द्रबाबू का बचपन (७४)
१५. झांसी की रानी (७७)
१६. आनबान के रखवारे (८४)
१७. महामना मालवीय (८५)
१८. देवताओं का प्यारा (८७)
१९. गोरा-बादल (९७)
२०. अहिल्याबाई (१०७)
२१. सेवामूर्ति ठक्करबापा (११२)
२२. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (११४)
२३. झलकारी (११७)
२४. विनोबा के पावन प्रसंग (१२४)
२५. बाल गंगाधर तिलक (१३१)
२६. रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१३३)
२७. लाला लाजपतराय (१३७)
२८. गणेशशंकर विद्यार्थी (१३९)
२९. शेरे पंजाब (१४१)
३०. अजीजन (१४३)
३१. राजा राममोहनराय (१५८)
३२. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (१५९)

मूल्य प्रत्येक पुस्तक का ४० नये पैसे।

इस माला में विविध विषयों की १६३ पुस्तकें निकल चुकी हैं

४० नये पै

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand